

राग—आड़ाना । ताल—एकताल  
 मन्दिरे मम के आसिले हे !  
 सकल गगन अमृतमगन,  
 दिशि दिशि गेल मिशि अमानिशि दूरे दूरे ॥  
 सकल दूयार आपनि खुलिल,  
 सकल प्रदीप आपनि ज्वलिल,  
 सब बीगा बाजिल नव नव सुरे सुरे ॥

			०	३						
			II	गा	-ा	पा	मज्जा	-मा	पा	I
				म	न्	दि	रें	०	म	
I	गा	-मा	-पा		२	पर्सा	-ा	-ा	गा	पर्मा
	म	०	०			के	०	०	आ	सि०
I	सा	सा	सा		मा	मा	मा	मा	पा	मज्जा
	स	क	ल		ग	ग	न	अ	मृ	-मा
I	गा	दा	गा		पा	दा	मा	पा	गा	रा
	दि	शि	दि		शि	गे	ल	मि	शि	I
I	गपा	-गपा	गा		गर्सा	-र्वा	र्सा	ग	गा	
	दू०	००	रे		दू०	०	रे			॥
II	{	मा	पा	पा		गपा	गपा	गा	गा	र्सा
		स	क	ल		दू०	या०	र	आ	पर्सा
I	ना	सा	सा		सा	र्वा	र्सा	ना	सा	र्सा
	स	क	ल		थ्र	दी	प	सा	पर्सा	ल
I	सान	सा	मज्जा		-र्मा	र्वा	र्सा	ना	र्सा	र्सा
	स	व	वी		०	गा	वा	जि	ल	व
I	गर्सा	-र्वा	र्सा		गर्सा	-र्वा	र्सा	ग	गा	I
	सु०	०	रे		सु०	०	रे			
							II	II		

[ स्वरलिपि : काञ्जालीचरण मेन । ]